ऑडियो नंबर–200 कम्पिला ओम् शांति

मु.21.6.83 पृ.3 मध्यादि से, 22.06.83 प्रातः क्लास पृ.1 से 2 मध्य तक

......................बाकी चिड़ियाएँ कोई जानवर थोड़े ही हो। तुम चिड़ियाओं ने सागर को हप किया है। तो कहाँ की बात जानवरों से आ करके लगाय दी है। तुमको रत्न दे देते हैं। कहाँ ज्ञान–रत्नों की बात और कहाँ पानी का सागर बैठ दिखाया है। है यह ज्ञान का सागर, ज्ञान–रत्न। और रूप–बसंत की भी कहानी है ना! तुम जानते हो रूप बाबा है। क्या कहा? रूप और बसंत की जोड़ी दिखाते हैं। रूप कौन हुआ? शिवबाबा और बसंत कौन हुआ? बसंत माना ज्ञान की खुशबू। बसंत ऋतु आती है तो फूल खिलते हैं, फूलों की खुशबू–ही–खुशबू चारों ओर उड़ती है। तो बसंत कौन हुआ? दिव्य गुणों की खुशबू जिसमें सबसे जास्ती उड़ती हो। कौन हुआ? ब्रह्मा। बाप हुआ रूप और ब्रह्मा हुआ बसंत, धारणाओं का राजा। इस द्वारा आ करके रत्न देते हैं। किस द्वारा? ब्रह्मा द्वारा। इनकी कोई वैल्यू नहीं रख सकते। यह नॉलेज है। किसकी वैल्यू नहीं रख सकते? ज्ञान रत्नों की, जिससे बड़ी भारी कमाई होती है। बाप इस मुख द्वारा तुमको रत्न देते हैं। बाप रूप भी है। ज्योति–स्वरूप है। ज्ञान का सागर है। ज़रूर ज्ञान ही सुनाएँगे। ज्योति–स्वरूप तुम भी हो; परंतु ज्ञान का सागर एक ही है। वह आ करके राजयोग सिखलाते हैं। पहले ब्रह्मा को, फिर तुम बच्चों को बैठ ज्ञान देते हैं। क्या कहा? राजयोग का ज्ञान पहले किसको देते हैं? पहले ब्रह्मा को देते हैं; क्योंकि ये ज्ञान है प्रवृत्तिमार्ग का। पहले तो प्रवृत्तिमार्ग का ब्रह्मा बने पक्का। बच्चों को रूप–बसंत बनाते हैं।

तुम्हारी आत्मा में एक ही बार आ करके झोली भरती है। ज्ञान–रत्नों की झोली तुम भरते हो। साधू–संत आदि कहते हैं– भर दे झोली, भर दे। इस भक्तिमार्ग की झोली में क्या रखा है! साधू–संत क्या कहते हैं? वो झोली टाँग लेते हैं और क्या कहते हैं कि हमारी झोली भर दो। अब उस स्थूल झोली भरने की तो बात है ही नहीं। बाबा ने तो किसी वाणी में नहीं बोला है, क्या? कि सिलवर का कटोरा या संदूकची टाँग दो, दान पात्र टाँग दो और वो भर दो। (किसी) मुरली में बोला क्या? नहीं। बाबा तो कहते हैं– ''माँगने से मरना भला।'' (मु.13.6.84 पृ.3 मध्य) इस भक्तिमार्ग की झोली में कुछ नहीं रखा है। भक्तिमार्ग में तो माँगना–ही–माँगना होता रहता है, माँगते ही रहते हैं। किस समय की बातें हैं? ये भक्तिमार्ग की शूटिंग भी कहाँ होती है? हम ब्राह्मणों की ही दुनियाँ में इस भक्तिमार्ग की शूटिंग होती है। यह है बुद्धि रूपी झोली। उनकी है स्थूल झोली और हमारी है सूक्ष्म बुद्धि रूपी संदूकची। इसमें क्या भरना है? ज्ञान–रत्न भरना है। याद से पवित्र बनाते। जितना याद करेंगे उतना बुद्धि पवित्र बनती जाएगी, पवित्र बुद्धि में ज्ञान–रत्न ज़्यादा समाएँगे। बर्तन इतना बड़ा शुद्ध चाहिए। नॉलेज भी ब्रह्मचर्य में अच्छी धारण होती है। रोज़मर्रे की गृहस्थी–जीवन का गृहस्थियों का यह अनुभव है कि जिन दिनों दृष्टि, वृत्ति, कृति विकारी बनती है तो बुद्धि में से ज्ञान उड़ जाता है और जिन दिनों निर्विकारी दृष्टि, वृत्ति होती है, उन दिनों बुद्धि में ज्ञान ठहरता है। तो बर्तन बहुत शुद्ध चाहिए। कौन–सा बर्तन? (किसी ने कहा–बुद्धि रूपी)। वह तो होते हैं छोटे बच्चे। यहाँ तो बूढ़े–जवान सब हैं। योग से बर्तन शुद्ध होता है, बुद्धि का ताला खुलता है।

तुम जानते हो, हम बच्चों में युद्ध के मैदान में मुख्य कौन–2 हैं? ब्रह्मा, फिर है दादी। क्या? (ग्रैण्ड मदर)। बड़ी नदी है। कौन? ये ब्रह्मा दादी भी है, बड़ी नदी है। सेकण्ड ग्रेड में मम्मा सरस्वती

है। इनका नाम तो बहुत ऊँच है। नाम–बाला करना है। यह तो गुप्त है। कौन? ब्रह्मा। शक्ति सेना में नाम है मम्मा का। जगदम्बा ब्रह्मा की बेटी सरस्वती। इनकी मम्मा फिर कौन है! किनकी मम्मा? जगदम्बा हुआ टाइटिल। जगदम्बा ब्रह्मा की बेटी सरस्वती। इनकी मम्मा फिर कौन? बताते भी जाते हैं और कहते भी जाते हैं। तो यह गुह्य बातें हैं। अब इन बातों को सुनाते हैं। ज़रूर कल्प पहले भी सुनाई हुई हैं, तब तो कहते हैं– ये गुह्य बातें हैं, जो सुनाता रहता हूँ।

बच्चे तो ढेर आएँगे। पिछाड़ी तक वृद्धि को पाते रहेंगे। विघ्न भी ज़रूर पड़ते हैं; परंतु झाड़ अवश्य प्रफुल्लित होना है। कोई किंग ऑफ फ्लॉवर भी हैं। किसको कहते हैं– किंग ऑफ फ्लॉवर? जो फूलों का राजा है 'कमल'। जैसे माला के ऊपर बाबा का रूप है। तुम भी ऐसे रूप वाले हो। सिर्फ़ तुम बसंत नहीं हो। (...), क्या? तुम क्या हो? तुम रूप हो और यह बसंत है। बसंत किसके लिए कहा? ब्रह्मा के लिए कहा– बसंत, धारणाओं वाला। वाणी भी कैसी चलाता है गुलज़ार दादी में प्रवेश करके? धारणाओं वाली वाणी चलाता। अब बाबा रूप–बसंत आया है, फिर यह हो गई जोड़ी। रूप भी है और बसंत भी है। तुमको भी ऐसा बनाते हैं। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का याद–प्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

देह और देह के सम्बंधों की दुनिया से मर जाएँ तो आप मुये मर गई दुनियाँ। अज्ञान काल में मनुष्य मरते हैं तो फिर उसी दुनियाँ में जन्म लेते हैं। हम अब इस पुरानी दुनियाँ में जन्म लेने वाले नहीं हैं। क्यों, दुनियाँ में जो मरते हैं और यहाँ मरते हैं, उसमें अंतर क्यों हो जाता है? वो नर्क में मरते हैं तो नर्क में ही जन्म लेते हैं और हम कहाँ मरते हैं? अरे! अंत मते सो गते होगी ना! दुःख की दुनियाँ में, दुःख के वायब्रेशन में शरीर छोड़ेंगे, तो दुःखी दुनियाँ में ही जन्म लेंगे और हमारे में क्या अंतर पड़ता है? हम रहते तो शरीर से इस दुःख की दुनियाँ में ही हैं, नर्क की दुनियाँ में ही हैं, शरीर भी नर्क की दुनियाँ में छोड़ते हैं; लेकिन हमारे वायब्रेशन, हमारी मनसा, हमारी मति अर्थात् बुद्धि की जो गति है, वो पुरानी दुनियाँ के वायब्रेशन से प्रभावित हो करके नहीं रहती। हम जब शरीर छोड़ते हैं तो स्टेज हमारी नई दुनियाँ की होगी। कि हमारी दुनियाँ नई दुनियाँ है, हमारी आँखों में/हमारी दृष्टि में, वृत्ति में और कर्मणा में भी नई दुनियाँ समाई हुई है, तो ज़रूर हमारी भी अंत मते सो गते होगी। तो दुनियाँ तो वही कायम है; लेकिन हमको क्या करना है? दुनियाँ भल चेन्ज न हो; लेकिन हम चेन्ज हो जाएँ, हमारी दृष्टि, वृत्ति, वायब्रेशन, वायुमण्डल, सब चेन्ज हो जाएँ, तो दुनियाँ भी चेन्ज हो जाएगी। जिस दुनियाँ में मरते हैं उसी दुनियाँ में दुनियाँ वाले जन्म लेते हैं और हम नई दुनियाँ में जन्म लेते हैं। तुम बच्चे जब बाप के बनते हो तो यह दुनियाँ खत्म हो जाती है। पुरानी दुनियाँ वास्तव में कब खत्म होती है और किनके लिए खत्म होती है? जो बाप के बनते हैं उनके लिए खत्म होती है और जितना–2 परसेंटेज में बाप के बनते हैं उतनी पुरानी दुनियाँ खत्म होती है।

ज़रूर कोई नौ लाख सितारे हैं, जो परमात्मा के गले का हार बनते हैं, नौलखा हार गाए जाते हैं। वो ऐसी आत्माएँ हैं जो इस पुरानी दुनियाँ की रग से निकल जातीं, बाप की बन जाती हैं, तो उनके लिए 84 जन्म की जो लेंथ है ऑलराउण्ड पार्ट की, वो उनको प्राप्त होती है। वो रिंचक मात्र भी पुरानी दुनियाँ में आ करके जन्म लेने वाली नहीं हैं। ऐसे नहीं कि पौने सोलह कला वाली दुनियाँ में आ जाएँगी, नहीं। तो मरने–2 (...)। फिर उनमें भी नंबरवार हैं। कहावत है– आप मुये तो मर गई दुनियाँ। जितना–2 हम अपने को मारेंगे माना देह–अभिमान को मारेंगे उतनी दुनियाँ खत्म होती

जाएगी, उस दुनियाँ से जन्म–जन्मांतर के लिए हमारा कनेक्शन टूट जाएगा जो दुःखदायी दुनियाँ है; हमारा कनेक्शन नई दुनियाँ से जुटेगा; परंतु दुनियाँ विनाश तो नहीं हो जाती है; क्योंकि सृष्टि तो अनादि है। इस समय ही दुनियाँ में फिर जन्म लेना पड़ता है। वो हुई दुनिया वालों की बात। अभी तुम बच्चे जबकि जीते जी मरते हो, तो बाप के बन जाते हो। आप मर जाते हो तो दुनियाँ भी खत्म हो जाती है। तुम मरेंगे तो यह दुनियाँ ही खत्म हो जाएगी। तुम जानते हो, हम फिर नई दुनियाँ में आएँगे। यह सिर्फ़ तुम ब्राह्मण ही जानते हो कि हम नई दुनियाँ में आवेंगे। क्या? तुम ब्राह्मण ही जानते हो, बाप के सम्मुख बैठे हो; जो बाप के सम्मुख नहीं हैं, वो इस बात को नहीं जानते। क्या? कि हम नई दुनियाँ में जावेंगे। वो समझते हैं शरीर छोड़ने के बाद अगले जन्म में जावेंगे और तुम क्या समझते हो? कि हम जीते जी नई दुनियाँ में जावेंगे। ईश्वर का बच्चा होने से हमको सतयुग का बर्थराइट मिलता है, जन्मसिद्ध अधिकार। ऐसे थोड़े ही कि बच्चा जन्म यहाँ ले, इस बाप से ले, इस जन्म में वर्सा उसको मिलना ही चाहिए ना! वर्सा यहाँ ले, तो बर्थराइट कहा जाएगा; अगर शरीर छूट गया, फिर थोड़े ही कहा जाएगा कि बर्थराइट मिला, जन्मसिद्ध अधिकार मिला। जन्मसिद्ध अधिकार का मतलब ही है, जन्म लेने से ही सिद्ध होता है कि बच्चे को अधिकार इसी जन्म में मिलना चाहिए। अगले जन्म में प्राप्ति हो तो उसको बर्थराइट नहीं कहा जाएगा; क्योंकि अगले जन्म में तो जिससे जन्म मिलेगा उसका बर्थराइट मिलेगा। स्वर्ग की बादशाही तुम बच्चों को मिलती है; क्योंकि स्वर्ग की बादशाही कोई देवताओं द्वारा स्थापन नहीं होती, हैविनली गॉडफादर ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं, डायरैक्ट हैविनली गॉडफादर से स्वर्ग का वर्सा लेते हो जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में। वो तथाकथित ब्राह्मण इस बात को नहीं जानते। ईश्वर का बच्चा होने से हमको बर्थराइट मिलता है, नर्क खत्म हो जाता है। इसमें कोई मेहनत नहीं है, सिर्फ़ बाप को याद करना है।

मनुष्य, जब कोई मरते हैं, तो उनको कहते हैं– 'राम–2' कहो। ऐसा क्यों है? पिछाड़ी में उठाने के समय कहते हैं– राम नाम सत् है। ऐसा क्यों? मरने का समय का मतलब है– अंत समय। ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियाँ में हर ब्राह्मण का जब अंत समय आता है तो परमात्म पार्ट की यथार्थता को जान जाता है, तो कहा जाता है– अंत। 'कृष्ण' कहो, ऐसे नहीं। क्या कहो? 'राम' कहो। छुपा रुस्तम बाद में खुलेगा। राम नाम सत्य है– जब अंत समय होता है तब कहते हैं। वो यादगार कहाँ की है? ज़रूर संगमयुग की यादगार है कि जब अंत होता है इस रुद्र ज्ञान यज्ञ का, तब वो राम बाप प्रत्यक्ष हो जाता है। तो मरते हैं तब कहते हैं– 'राम–2' कहो माना उस पुरानी दुनियाँ से जो–2 मरने का फैसला करते जाते हैं, उनकी मन–बुद्धि में, वायब्रेशन में यह भर जाता है कि राम का नाम ही सत्य है और बाकी सब झूठ। एक ही सच्चा है और बाकी सब नंबरवार कुछ–न–कुछ झूठे ज़रूर हैं। यह भगवान को ही कहते हैं– राम नाम सत्य है। राम नाम सत् है अर्थात् परमपिता परमात्मा जो सत् है, उसका ही नाम लेना चाहिए। उसको 'राम' कह देते हैं। समझा कि पिछाड़ी में उठाने के समय क्यों कहते हैं– राम नाम सत्य है? जब इस रुद्र ज्ञान यज्ञ की अंतिम आहुति होती है, तो भी वो राम ही प्रत्यक्ष होता है, जिसे मुरलियों में बोला– ''राम बाप को कहा जाता है।'' (मु.6.9.70 पृ.3 मध्य) ऐसे कहीं नहीं कहा– ''कृष्ण बाप को कहा जाता है, ब्रह्मा बाप को कहा जाता है।'' ब्रह्मा को तो बता दिया– ''यह बड़ी माँ है, जगदम्बा है।'' हाँ, टाइटिल मिल जाता है, वो बात दूसरी है।

माला भी 'राम–2' कह करके सिमिरते हैं। राम से माला का क्या कनेक्शन? सिमिरना माना स्मरण करना। माला सिमिरते हैं, स्मरण करते हैं माला के मणकों को, तो एक–2 मणके के ऊपर मुख

से क्या छाप लगाते हैं? राम–2। अरे! आत्मा रूपी मणके तो अलग–2 हैं, फिर सबके ऊपर राम का छाप क्यों लगाते हैं? क्योंकि माला रूपी संगठन बनाने वाला ज़रूर चाहिए। ये है नई सतयुगी दुनियाँ का फाउंडेशन का संगठन। ये नई सतयुगी दुनियाँ, स्वर्ग की दुनियाँ का संगठन और कोई बनाय नहीं सकता। तो राम–2 की धुनि ऐसे लगाते हैं जैसे बाजा बजता है साज़पूर्वक। तुम बच्चों को बाप समझाते हैं कि कोई आवाज़ नहीं करना है। सिर्फ़ बुद्धि से याद करना है। किसको? उस बाप को जिसने हमारे लिए नई दुनियाँ रची; क्योंकि बाप आ करके नर्क की दुनियाँ में स्वर्ग का वर्सा देते हैं। जो आदि में हुआ सो ही अंत में बड़े रूप में होता है। यज्ञ के आदि में कैसे दिया नर्क के बीच में स्वर्ग का वर्सा? कोई सैम्पल दिखाया! कराची में जो संगठन बना, उस समय सारे हिंदुस्तान–पाकिस्तान में खून की नदियाँ बह रही थीं और कराची में जो बाप के बच्चे थे, वो सुख की स्टेज में अपने को अनुभव कर रहे थे। तो नर्क की दुनियाँ के बीच स्वर्ग का वर्सा मिला न, सुख का वर्सा मिला न! तो ऐसे ही अंत में भी होता है। आदि में हुआ बीजरूप में और अंत में होता है विस्तार रूप में। तुम जानते हो, जीते जी ईश्वर की गोद में आने से यह दुःख रूपी दुनियाँ खत्म हो जाती है। मरने के बाद, ऐसे नहीं कहा। कब? जीते जी ईश्वर की गोद में अगर पहुँच गए तो उनकी 100 परसेंट ये दुनियाँ, पुरानी दुनियाँ, दुःखदायी दुनियाँ उनके लिए खत्म हो गई; नहीं तो कुछ–न–कुछ पुरानी दुनियाँ में आकर जन्म लेंगे, कल्प–2 के लिए पार्ट नूँध जाएगा, ऑलराउण्ड पार्टधारी बाप के बच्चे, डायरैक्ट बच्चे नहीं बन सकेंगे।

बच्चे कहते हैं– बाबा, हम आपके गले का हार बन जाएँगे। बाप के गले का हार कितने बनते हैं? नौ लाख हैं। नौ लाख सितारे गले का हार गाए जाते हैं। गाया भी जाता है– रुद्र माला। किसकी माला? रुद्र की माला, रौद्र रूप धारण करने वाले की माला। और धर्मपिताएँ ऐसा रौद्र रूप नहीं धारण करते, जो पुरानेपन को खत्म कर सकें, पुरानी मान्यताओं को खत्म कर सकें, पुरानी परम्पराओं को, पुरानी धर्म की धारणाओं को खत्म कर सकें। ये तो एक बाप ही है, जो पुरानेपन का विनाश करता है और नई दुनियाँ की स्थापना प्रत्यक्ष कर देता है; क्योंकि जब तक पुरानेपन का विनाश नहीं हुआ है तब तक नई दुनियाँ प्रत्यक्ष नहीं हो सकती, स्वर्ग भी स्थापन नहीं हो सकता। तो रुद्र माला कही जाती है; राम माला वा कृष्ण माला नहीं कहा जाता है। क्यों, राम माला या कृष्ण माला नाम क्यों नहीं पड़ा? नाम किस आधार पर पड़ता है? जैसा काम वैसे नाम सैकड़ों, हज़ारों, करोड़ों की तादाद में भगवान के नाम गाए हुए हैं। तो रुद्रमाला नाम क्यों है? काम किया है रौद्र रूप धारण करने का, विकराल रूप धारण करने का। जब तक ऐसा ज्वाला रूप धारण नहीं किया जाता तब तक कचड़े का विनाश नहीं हो सकता दुनियाँ में। इस रुद्रमाला में पिरोने का तुम पुरुषार्थ कर रहे हो।

इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में बैठे हो, कल्प पहले मुआफिक। किसके ज्ञान यज्ञ में? रुद्र ज्ञान यज्ञ में। कब स्थापन हुआ? ये रुद्र ज्ञान यज्ञ कब स्थापन हुआ? आज से 50/55 वर्ष हो चुके जब इस रुद्र ज्ञान यज्ञ की स्थापना हुई। तो किसके द्वारा हुई? नाम है– रुद्र ज्ञान यज्ञ, तो स्थापन करने वाला कौन होगा? ज़रूर रुद्र ही होगा। आदि में भी उसने रौद्र रूप धारण किया होगा; इसलिए अव्यक्त वाणी में बोला– ''स्थापना के साथ–2 यज्ञ कुण्ड से विनाश ज्वाला भी प्रज्ज्वलित हुई। निमित्त कौन बने? ब्रह्मा, बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने। तो जो निमित्त बनते हैं आदि में, उन्हीं को फिर बाद में प्रत्यक्ष हो करके सम्पन्न यज्ञ की आहुति करनी पड़े, वो विनाश ज्वाला को सम्पन्न भी उन्हीं को करना पड़े।'' (अ.वा.3.2.74 पृ.13 अंत)

दूसरा कोई सत्संग नहीं है जहाँ ऐसे समझते हों कि हम ईश्वर बाप के गले में पिरोए हुए हैं। क्या कहा? ये एक ही सत का संग है, जिसके संग में रहने वाले ऑलराउण्ड सत् बनते हैं। जिन आत्माओं का जीवन बीच में खण्डित हो जाता है, उनको ऑलराउण्ड सत् नहीं कहेंगे। सत्य कभी खण्डित नहीं होता, सत्य अनादि है और अनंत काल तक रहता है। जो झूठे होते हैं वो खण्डित हो जाते हैं, कम जन्म लेते हैं, ये सृष्टि रूपी रंगमंच उनको छोड़ना पड़ता है। तो सत्य में बहुत ताकत होती है। सच्चाई, कहते हैं– सर के ऊपर चढ़ करके बोलती है। तो दुनियाँ में ऐसा कोई सत्संग नहीं है, जिसमें समझते हों कि हम भगवान के गले का हार बनेंगे। बाप से तो ज़रूर वर्सा मिलेगा। 'बाप' कौन कहते हैं? 'वो हमारा बाप है', वो कौन कहता है? बच्चे! बच्चे माना? कीड़े–मकोड़ों के बच्चे? कीड़े–मकोड़े सतयुग में होंगे नहीं। मक्खी–मच्छरों के बच्चे? वो तो 5000 वर्ष की दुनियाँ में लास्ट में आकर थोड़े समय के लिए जन्म लेंगे। वो तो मक्खी–मच्छर हो गए, जो 700 करोड़ मनुष्य–आत्माएँ भी बताय दी हैं। वो क्या हैं? मक्खी–मच्छर। तो बच्चे कौन–से? पूरे 84 जन्म लेने वाले, अविनाशी ऑलराउण्डर पार्ट बजाने वाले आत्मा रूपी बच्चे। आत्मा माना आत्मिक स्टेज वाले बीज रूप। बीज का कभी विनाश नहीं होता, वो बच्चे। आत्मा में मन–बुद्धि है ना। अगर मन–बुद्धि न चले, मनन–चिंतन–मंथन न चले, अपना मनन–चिंतन–मंथन न चले, दूसरों का आधार ले करके चलने वाली आत्माएँ हों, तो उनको मनुष्य कहेंगे या जानवर कहेंगे? मनन–चिंतन चलने वाले को ही मनुष्य कहा जाता है, नहीं तो जानवर और मनुष्य में कोई अंतर नहीं। तो जिनके अंदर स्वयं का मनन–चिंतन–मंथन है, ज्ञान के आधार पर जिनका मनन–चिंतन–मंथन चलता है और ज्ञान आता ही है परमात्मा बाप से, वही अजर–अमर–अविनाशी आत्माएँ हैं इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर पार्ट बजाने वाली; नहीं तो कुछ–न–कुछ उनका पार्ट कम हो जाता है। वही बाप के डायरैक्ट बच्चे हैं असली, जो जीते जी मरकर बाप के बनते हैं। यथा राजा तथा प्रजा। आत्मा में मन–बुद्धि है। बुद्धि समझती है, फिर कहती है–पहले संकल्प आता है, फिर कर्मेंद्रियों से कहा जाता है–बरोबर हम बाबा के बने हैं। माना? जो बाप के डायरैक्ट बच्चे बनने वाले होंगे। सतयुग में जो राधा–कृष्ण बच्चे पैदा होंगे, वो डायरैक्ट ईश्वर बाप के बच्चे कहे जाएँगे? नहीं कहे जाएँगे। क्यों? क्योंकि वो वर्सा किससे लेंगे? वो वर्सा लेंगे अपने देवताई माँ–बाप से। देवताई वर्सा उनको मिलेगा; ईश्वर का डायरैक्ट वर्सा वो नहीं प्राप्त कर सकेंगे, डायरैक्ट ईश्वर से नहीं प्राप्त कर सकेंगे। तो पूरे 84 जन्म भी उनके नहीं होंगे, कुछ–न–कुछ जन्म कम हो जाता है। तो जिनके मन के अंदर ये संकल्प आता है कि हमको इसी जन्म में विश्व की बादशाही जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में बाप से लेनी है, वही सशक्त मन–बुद्धि वाली आत्माएँ हैं और मन–बुद्धि को ही आत्मा कहा जाता है। बरोबर हम बाबा के बने हैं; किसी मनुष्यमात्र के हम बनने वाले नहीं हैं। हमारा राजा है तो कौन है? बाप; क्योंकि बाप की प्रजा भी होती है, बाप के भक्त भी बनते हैं और बाप के वारिसदार भी बनते हैं, बाप के हज़ार सहयोगी भी बनते हैं; जैसे और–2 राजाओं की प्रजा भी होती है, और–2 देवताएँ होते हैं तो उनकी प्रजा भी होती है, भक्त भी होते हैं। अब जो बाप के बच्चे हैं, वो बाबा के ही हो करके रहेंगे। ऐसे नहीं, बाबा के बने और फिर किसी दूसरे की गोद में चले जाएँ, ट्रेटर बन जाएँ। वास्तव में उनके अंदर संस्कार भरे हुए हैं 63 जन्मों के, जो बाप को और बाप के बच्चों को धोखा देते हैं; नहीं तो जो असली बच्चा होगा, वो एक बार बाप को पहचानने के बाद कभी दुनियाँ में जा करके ये नहीं कहेगा कि ये हमारा बाप नहीं है। बाप है माना बाप है। निश्चयबुद्धि विजयते और अनिश्चय बुद्धि विनश्यते हो जाते हैं। ऐसे थोड़े ही कहा जाता है कि नहीं, 90 परसेंट हमने पहचाना था, 90 परसेंट हमारा बाप था, 10 परसेंट बाप नहीं था। निश्चय में परसेंटेज नहीं होती

है। गॉडफादर कहते हैं ना! फिर पूछो, तुम्हारे में गॉडफादर की नॉलेज है? तो कहेंगे– गॉड तो सर्वव्यापी है। कौन कहेंगे– गॉड सर्वव्यापी है? जो बाप को छोड़कर भाग जाते हैं, जो संगमयुग में बेहद के बाप के परिवार को छोड़कर भागते हैं, वो फिर उस दुनियाँ में भी, बड़े ड्रामा में भी जा करके कहते हैं। क्या? कि परमात्मा तो सर्वव्यापी। एकव्यापी को नहीं पहचान पाया तो क्या कहेंगे? सर्वव्यापी– मेरे में है, तेरे में है, कण–2 में है, पत्थर में है, ठिक्कर में है माना पत्थर–ठिक्कर बुद्धियों की शरण ले लेंगे, उनको ही बाप समझ करके बैठ जाएँगे। बोलो, तुम्हारी आत्मा कहती है– परमपिता परमात्मा। तो फिर सर्वव्यापी कैसे होगा? परम महात्मा तो नहीं कहते, परम पुण्यात्मा तो नहीं कहते, परम पापात्मा तो नहीं कहते। क्या कहते? परमपिता परमात्मा। फिर सर्वव्यापी कहाँ हुआ! बच्चे में बाप आ गया क्या? अगर सर्वव्यापी है तो हर बच्चे में बाप प्रवेश हो जाता है क्या? बाप को सर्वव्यापी कहना बिल्कुल राँग है। लौकिक बाप के भी 5/7 बच्चे होंगे, तो कहेंगे क्या कि बाबा, आप सर्वव्यापी हो। यह भी समझने की बात है। मुख से कहते हो 'परमपिता', फिर सर्वव्यापी कैसे कह सकते हो! परम तो एक ही होगा कि सारे ही परम हो जाएँगे? पिता फिर मेरे में है– यह कैसे हो सकता है? बच्चा कहे मेरे में बाप का प्रवेश है। तो बच्चा ऐसे थोड़े ही कहेगा कि बाप मेरे अंदर समाय गया। हे अम्मा! मेरे अंदर बाप आया हुआ है, मैं तुम्हें जैसे चलाऊँ वैसे तुम चलो। ऐसे कहेगा? फिर तो वो अम्मा का भी खसम हो गया। कितनी कच्ची ग्लानि की है! ऐसे सर्वव्यापी कहने वाले ही फिर कृष्ण बच्चे को गीता माता का पति बनाय देते हैं, जुल्म कर दिया। बच्चा कभी नहीं कह सकता कि मेरे में बाप व्यापक है। जो कहते हैं कि मेरे अंदर शिवबाबा है, उनको मुरलियों में बाबा क्या कहते हैं? हिरण्यकश्यप हैं जो कहते हैं– मेरे अंदर शिवबाबा है। जिसके अंदर शिवबाबा होगा उसको कहने की दरकार नहीं है। क्या? कि मेरे अंदर शिवबाबा है। वो तो स्वतः ही प्रत्यक्ष होगा। सिद्ध करने से कभी कोई चीज़ प्रत्यक्ष नहीं हो सकती, कोई आत्मा भी प्रत्यक्ष नहीं हो सकती। तो अपने को परमात्मा कहने से कोई परमात्मा सिद्ध नहीं हो सकेगा। जो होगा सत्य, स्वतः ही सत् प्रत्यक्ष होगा; इसलिए कहते हैं– सत्य सिर के ऊपर चढ़ करके बोलता है; नहीं तो यह नहीं कहा जाता। सच्चाई में बहुत ताकत होती है। तो बच्चा थोड़े ही कहेगा कि मैं बाप हूँ। तुम आत्मा उनके बच्चे हो। फिर कहते हो कि पिता मेरे में भी है। बाप कैसे बच्चे में होगा! बहुत अच्छी रीति समझ करके फिर समझाना है। गीता में भी कहा है, भक्तिमार्ग की गीता में भी लिखा हुआ है अभी तक। आटे में लून मिसल सच्चाई तो है ना! ''न अहम् तेषु ते मयि'' (गीता 7/12), मैं उन पत्तों–2 में व्यापक नहीं हूँ; वो मेरे में हैं। मतलब? बीज में सारा झाड़ समाया हुआ है; लेकिन पत्तों में बीज नहीं समाया हुआ है। अगर पत्तों में समाया हुआ होता तो पत्ते को ज़मीन में बो दो, वृक्ष निकल आना चाहिए; नहीं निकल सकता। न तने में है, न डालियों में है, न फलों में है, न फूलों में है, वो सर्वव्यापी नहीं है। हाँ, सारी सृष्टि उसके अंदर समाई हुई है; क्योंकि वो सारे मनुष्य–सृष्टि का बीज है। तो बीज में सब–कुछ समाया हुआ है। बीज से प्यार किया जैसे सारे विश्व से प्यार किया। विश्व–कल्याणकारी स्वतः ही बन जावेंगे। बीज को स्नेह दिया तो सारे वृक्ष के पत्तों–2 को स्नेह मिल जाएगा। बहुत अच्छी रीति समझ करके समझाना है।

रुद्र ज्ञान यज्ञ तो मशहूर है। रुद्र है निराकार। क्या? रुद्र निराकार है, कृष्ण साकार है– क्या मतलब? हाँ, कि जो रुद्र का पार्ट है वो निराकारी स्टेज वाला है। ऐसे नहीं कि साकार शरीर से रुद्र प्रत्यक्ष नहीं होता। इसलिए मुरली में बताया– ''मेरी तो आत्मा का ही नाम बिंदु है, शिव। मुझ बिंदु का नाम है 'शिव'। वो नाम कभी नहीं बदलता। शरीर बदलते हैं तो नाम भी बदल जाता है।'' (मु.21.1.

70 पृ.2 आदि) इसका क्या अर्थ हुआ? कि ज़रूर शिव ज्योतिबिंदु ने शरीर बदला है तब तो 'रुद्र' नाम पड़ा और बिना शरीर के रौद्र रूप कैसे धारण करेगा, विकराल रूप कैसे धारण करेगा? तो रुद्र निराकार का मतलब ये नहीं कि बिंदु है। उस बिंदु का नाम रुद्र नहीं होता, बिंदु का नाम तो सिर्फ़, क्या होता है? शिव ही होता है। और किसी आत्मा का नाम नहीं है, एक शिव की ही आत्मा का नाम है। बाकी सबके शरीरों के नाम हैं। तो वही ज्योतिबिंदु शिव जब शरीर धारण करता है, विकराल रूप धारण करता है कचड़े वाली दुनियाँ के प्रति, कचड़े को भस्म करने के लिए, तो उसका नाम पड़ता है 'रुद्र'। कृष्ण साकार है अर्थात् संगमयुग में कृष्ण की सोल भी प्रत्यक्ष होती है और रुद्र की सोल, शिव की भी सोल प्रत्यक्ष होती है; लेकिन कृष्ण वाली आत्मा रौद्र रूप धारण नहीं कर सकती, वो मृदुल पार्ट बजाने वाली आत्मा है; इसलिए वो साकार है। कृष्ण का/ब्रह्मा का एक भी ऐसा चित्र नहीं मिलेगा संगमयुगी पार्ट का, जिसमें उनके चेहरे में निराकारी स्टेज दिखाई गई हो, जैसे धर्मपिताओं की दिखाई जाती है। बुद्ध की देखो, क्राइस्ट को ध्यान से देखो, गुरूनानक को ध्यान से देखो, देखने से ही क्या लगता है? जैसे कि ये आत्माएँ इस दुनियाँ में नहीं हैं, निःसंकल्पी–निराकारी, निराकारी लोक से अभी–2 आई हुई हैं, ऐसी स्टेज दिखाई जाती है। तो वो है बीज बाप। माता साकार होती है तो कृष्ण भी साकार है। आखिर भगवान कहा किसको जाए– साकार को कहा जाए या निराकार को कहा जाए? कृष्ण को तो नहीं कह सकते। हर धर्म के जो भी धर्मपिताएँ हैं, उन धर्म वालों के लिए जैसे वही भगवान हैं; परंतु वो सब कैसी स्टेज वाले हैं? निराकारी स्टेज वाले। तो बाप भी निराकार है, जो उन धर्मपिताओं का भी पिता है, बीज है। बीज को 'पिता' कहा जाता है। मनुष्य तो बहुत भूले हुए हैं। भगवान कृष्ण को नहीं कह सकते। गॉडफादर इज़ ऑम्निप्रेजेंट, मेरे में भी है। अरे! बाप तो घर में ही रहता है, और कहाँ रहेंगे! अभी बाप इस बेहद के घर में आया हुआ है। यहाँ विराजमान है। कहते हैं– मैंने इसमें प्रवेश किया है। घर किसे कहा जाता है? (किसी ने कुछ कहा–...) स्थान को घर कहा जाता है! बाप का घर, हाँ, घर वो है जहाँ बच्चे पलते हों, बच्चे जन्म लेते हों, परिवार बनता हो। तो माता से ही परिवार शुरू होता है। मैंने इसमें प्रवेश किया है, तो जिसमें प्रवेश किया है वही ब्रह्म अथवा ब्रह्मा है। ये तुरिया तत्व है।

तो कुछ पूछना हो तो पूछो। आगे पितरों को बुलाने का बहुत रिवाज़ था। पितृ तो आत्मा है ना! पितर को यानी आत्मा को खिलाया जाता है। कहेंगे, आज हमारे दादे का पितर है, आज फलाने का पितर है। तो आत्मा को बुलाया जाता है, खिलाया जाता है। समझो, किसका स्त्री पर प्यार है, उसको बुलाते हैं। कहते हैं– हमने हीरे की फुल्ली पहनाने का अंजाम किया है। ब्राह्मण को बुलाए उनको हीरे की फुल्ली पहनाते हैं। बुलाया तो आत्मा को ना! शरीर कोई थोड़े ही आया! ये मिसाल क्यों दिया? ये याददाश्त दिलाने के लिए मिसाल दिया कि भक्तिमार्ग की जो ये पितर खिलाने की रस्म चली आ रही है आत्मा को बुलाकर, ये किस समय की यादगार है? ज़रूर इस संगमयुग की यादगार है। ज़रूर इस संगमयुग में हमारा जो पितर है, कौन? मम्मा–बाबा और परमपिता परमात्मा शिव। उन पितरों को ज़रूर ब्राह्मण में बुलाया जाता है। तो किसको खिलाते हैं? भोग किसको लगाएँगे? शरीर को भोग लगाते हैं या आत्मा को भोग लगाते हैं? ज़रूर जो आत्मा आती है उसको भोग लगाया जाता। तो यह रस्म भारतवर्ष में ही है, इस समय की यादगार माना परमपिता परमात्मा आत्मा है, वो भी शरीर में आ करके प्रत्यक्ष होता है। जैसे तुम सूक्ष्मवतन में जाते हो। कोई मर गया है, उनका भोग लगाते हो। तो सूक्ष्मवतन में वह आत्मा आती है। यह हैं बिल्कुल नई–2 बातें। जब तक कोई अच्छी

रीति समझ, समझे नहीं, तब तक समझेगा कैसे? जानेगा कैसे? मनुष्यों का संशय उठ पड़ता है। मोस्टली संशय किस बात पर आता है? ज्ञान में इतना संशय नहीं आएगा, ड्रामा में भी इतना संशय नहीं आएगा सबको, अपनी आत्मा के पार्ट में भी संशय नहीं आएगा। समझते हैं कि हम ब्राह्मण बनेंगे ही, ब्राह्मण सो देवता बनेंगे ही। मुख्य संशय किस बात पर आता है? बाप के ऊपर निश्चय–अनिश्चय ये चक्र चलता रहता है। तो मनुष्यों को संशय उठ पड़ता है कि हमारा बाप है या नहीं है? तो पितरों की सोल को बुलाते हैं। जो क्लोज–कॉण्टेक्ट में आने वाले होंगे जन्म–जन्मांतर के बच्चे, वो उसको ज़रूर पहचान लेंगे। किसको? जिस मुकर्रर रथ में, जिस एकव्यापी रथ में परमात्मा प्रवेश हो करके संसार के सामने, परमात्म पार्ट के रूप में प्रत्यक्ष होता है, उस परमात्मा बाप के रूप को पहचान लेंगे, दूसरे नहीं पहचानेंगे। तो मनुष्यों को संशय उठ पड़ता है– यह क्या करते हैं! अरे, पितृ खिलाते हैं, उनको बुलाते हैं, हार आदि पहनाते हैं ना! यह भी वहाँ बैठ उनको हार आदि पहनाते हैं ना! कहाँ? कौन? 'यह भी' माना कौन? सूक्ष्मवतन की बात बताई। ब्राह्मणों की रस्म–रिवाज़ देखो कैसी है! सभी मंदिरों आदि में भोग लगाते हैं। यादगार किसकी है और कहाँ की यादगार है? पितृ को भोग लगाते हैं, अब वह हैं कहाँ? यह तो नहीं समझ सकते।

तुम तो जानते हो, जिन्होंने भी धर्म स्थापन किया हुआ है, वह सब यहाँ इसी स्टेज पर हैं। ऐसे नहीं कि कोई धर्म स्थापन करने वाला कोई वाणी से परे स्थान में चला गया, निर्वाणधाम में चला गया, नहीं। सब इसी सृष्टि पर मौजूद हैं। तो देवी–देवता सनातन धर्म की स्थापना करने वाला सनतकुमार भी ज़रूर इसी सृष्टि पर होना चाहिए। जैसे क्रिश्चियन धर्म की स्थापना करने वाला क्राइस्ट यहाँ है, बौद्ध धर्म की स्थापना करने वाला महात्मा बुद्ध यहीं इसी सृष्टि पर है, ऐसे ही सनातन धर्म की स्थापना करने वाला सनतकुमार, जो ब्रह्मा का सबसे बड़ा पुत्र माना जाता है पहला–2, वो भी इसी सृष्टि पर होना चाहिए। जैसे बाबा कहते हैं– मैं ब्राह्मण धर्म स्थापन करता हूँ। यह तो पतित आत्मा है, पावन आत्मा ही आ करके धर्म स्थापना करती है। उनको फिर सतो, रजो, तमो में आना ही होता है। जो धर्म स्थापन करती है उनको। तो ज़रूर प्रजापिता को भी चार अवस्थाओं से पास होना ही पड़ता है। इस समय सभी तमोप्रधान हैं। बाबा तो है ही पतित–पावन। वह कब तमोप्रधान नहीं होता है; भल तमोप्रधान शरीर में प्रवेश करता है, पतित तन में आता हूँ, पतित दुनियाँ में आता हूँ, गंदे–से–गंदे गाँव में आता हूँ; लेकिन वो पतितों को पावन बनाने वाला एवरप्योर है। ये देखने वालों की दृष्टि है, किसे देखती है– शव को देखती है या शिव को देखती है? मनुष्य को तो पतित–पावन नहीं कहेंगे। प्रजापिता क्या हुआ? मनुष्य हुआ या परमात्मा हुआ, परमपिता हुआ? नहीं। वो भी तो मनुष्य है। पतित–पावन माना सारी दुनियाँ का पतित–पावन। ऐसे नहीं, जो अपने सहयोगी हों उनका पतित–पावन, जो विरोधी हों उनका पतित–पावन नहीं। पतित दुनियाँ को पावन बनाने वाला एक बाप के सिवाय कोई हो ही नहीं सकता। वह तो आते हैं अपना–2 धर्म स्थापन करने, कोई राजाई स्थापन करने के लिए नहीं आते हैं। कौन? दूसरे–2 धर्म के धर्मपिताएँ– न राजाई स्थापन करते हैं, न राजधानी स्थापन करते हैं और न पुरानी परम्पराओं का, पुरानी मान्यताओं का विनाश कर पाते हैं। जैसे विष का घड़ा रखा हुआ हो, उसमें विष रस भरा हुआ है और ऊपर से कोई आ करके और दूध डालता जाए, तो क्या वो दूध और विष अमृत बन जाएगा सब? वो तो मिक्स होता चला जाएगा। जब तक पूरा घड़ा खाली नहीं हुआ है तब तक विष अमृत नहीं बन सकता। तो वो सब धर्मपिताएँ सिर्फ़ अपना धर्म स्थापन करने आते हैं, राजाई स्थापन करने नहीं आते। बाप तो राजाई स्थापन करके जाते हैं। ऐसे

नहीं, बीच में चले जाएँ, पढ़ाई पढ़ायी और चले जाएँ वापस। नहीं। तुम बच्चों को राजाई देकर जाता हूँ, पुरानी दुनियाँ का विनाश कराय जाता हूँ। ऐसे नहीं, विनाश सम्पन्न न हो, स्थापना सम्पन्न न हो, (बीच में) चला जाए।

क्रिश्चियन धर्म का सिज़रा वहाँ है। पहले क्राइस्ट आया, फिर उनके पिछाड़ी भी आते रहेंगे, वृद्धि को पाते रहेंगे। वह कोई पतित को पावन नहीं बनाते हैं कि पतितों को पावन बना करके वापस जाएँ। नहीं। कब जाते हैं वापस? जब सारी आत्माएँ ऊपर से नीचे आ जाती हैं उनके धर्म की और बाप भी आता है। बाप के आए बिगर वो भी वापस नहीं जा सकतीं। तो सब धर्मों के पिताओं के आने के बाद उनके फॉलोअर्स पीछे–2 आते रहते हैं, नीचे गिरते जाते हैं, वृद्धि को पाते जाते हैं। वो कोई पतितों को पावन नहीं बनाय सकते; क्योंकि खुद ही नीचे गिरते हैं। नंबरवार उन्हों की संख्या आती है। पतित–पावन तो इस समय चाहिए ना! किस समय? संगम(युग) में। जबकि सब कब्रदाखिल हो जाते हैं। कब्रदाखिल माना? देह–अभिमान की मिट्‌टी में सब मिल जाते हैं। सबको पावन बनाने वाला एक ही है। यह तो समझते हो– बरोबर इस समय सारी दुनियाँ जड़–जड़ीभूत है। जड़–जड़ीभूत माना? बुद्धि जड़ बन चुकी है, बुद्धि जैसे कि चलती ही नहीं, गतिशील बनती ही नहीं। बनियन ट्री का मिसाल देते हैं। बहुत बड़ा झाड़ होता है। उनके नीचे बहुत पार्टियाँ जा करके बैठती हैं। उसका फाउंडेशन सड़ा हुआ है। बाकी सब टाल–टालियाँ खड़ी हैं। कहाँ का मिसाल दिया? कलकत्ते में बनियन ट्री है, जहाँ के लिए बोला अव्यक्त वाणी में– "इस रथ को कहाँ से पकड़ा? पूर्वी बंगाल से।" (अ.वा.1.2.79 पृ. 259 आदि) फिर जब प्रजापिता का रथ ही सारी मनुष्य–सृष्टि का बीज है, तो ज़रूर सूर्य कहाँ से उदय होगा? ज़रूर भारत का जो पूर्व है, वहीं से सूर्य उदय होगा। ऐसे नहीं कि माउण्ट आबू में जाकर उदय होगा। वहाँ उदय हो, तो वहाँ यादगार कौन–सी बनी हुई है? (किसी ने कुछ कहा–...) सन सेट प्वॉइंट। ये उदय होने की यादगार है? ये तो अस्त होने की यादगार है। तो यह भी झाड़ है मनुष्य–सृष्टि का, जो ब्राह्मणों से शुरू होता है। ब्राह्मण हैं इसके आदि। देवी–देवता धर्म का जो झाड़ है, उसका फाउण्डेशन उल्टा लगा है। उल्टा ऊपर में है और जड़ एकदम कट गई। बाकी सब हैं। बीज हो तब तो फिर से आ करके स्थापन करें। जब तक बीज ही प्रत्यक्ष नहीं हुआ तो नया झाड़ कैसे तैयार होगा? भल सारा वृक्ष विस्तार को पा जाए, फूल भी आ जाएँ, फल भी आ जाएँ; लेकिन जब तक बीज तैयार नहीं होगा तब तक नया झाड़ नहीं बन सकता। बीज जब बोया जाता है, उस समय वो अपने को खाक में मिला देता है। बीज अगर खाक में न मिले, मिट्‌टी में न मिले तो कभी वृक्ष बन करके पैदा नहीं हो सकता। तो कभी संशय नहीं लाना चाहिए कि राम नाम सत्य है, अंत समय में जब राम ही भगवान के रूप में प्रत्यक्ष होता है, तो राम वाली आत्मा फेल क्यों हो गई? अरे! बीज का ये पार्ट है। क्या? (किसी ने कुछ कहा–...) कि बीज जब तक खाक में नहीं मिलता, मिट्‌टी में नहीं मिलता, तब तक वो सरसब्ज़ बाग तैयार नहीं हो सकता। तो राम वाली आत्मा फेल हो गई, विषय विकारों के गटर में गिर गई यज्ञ के आदि में, ऐसा संशय नहीं लाना चाहिए। अरे! सतयुग की ऐसी कोई आत्मा है, जो त्रेता में जा करके चंद्रवंशी न बनती हो, फेल न होती हो? ऐसा अहंकार किसी का कायम रह सकता है कि माया किसी को गटर में नहीं डालती? माया से कोई बच सकता है क्या? ऐसा अहंकार कोई न करे, क्या! कि ज्ञान में आने के तुरंत बाद हमने माया को पूरा जीत लिया। माया किसी को छोड़ती नहीं है। तो यज्ञ के आदि में जिन आत्माओं का पार्ट ही बुद्धि का है, उन बुद्धिमान आत्माओं को, बुद्धिमान बाप के बुद्धिमान बच्चों को अगर बुद्धि का पूरा डोज़ नहीं मिलता, तो वो चलेंगे

कैसे ज्ञान में? इसलिए मुरली में बोला है कि ''क्यों गिर गए? क्योंकि उस समय पूरा ज्ञान नहीं था।'' (मु.25.7.67 पृ.2 अंत) जब सृष्टि का पूरा ज्ञान ही नहीं था, भक्तिमार्ग के आधार पर यज्ञ चल रहा था, साक्षात्कारों के आधार पर, भक्तिमार्ग की गीता बैठ करके सुनाते थे अर्थ करके, तो ज्ञान न होने के कारण वो आत्माएँ टूट गईं, तो कोई बड़ी बात नहीं। अरे! अभी इतना ज्ञान का सशक्त डोज़ मिल रहा है, सब–कुछ बना–बनाया मिल रहा है, तो भी आत्माएँ टूट जाती हैं, तो आदि में टूट गईं तो क्या बड़ी बात हुई!

तो बाप कहते हैं मैं फिर से आ करके स्थापना कराता हूँ। ये 'फिर से' शब्द क्यों लगाया? फिर से माना? दुबारा। उसका अर्थ ये नहीं लगता है कि कल्प–2 मैं आ करके स्थापना करता हूँ। दुबारा का मतलब यज्ञ के आदि में भी वो बीज बाप प्रत्यक्ष होता है और अंत में भी प्रत्यक्ष होता है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश। पहले कौन–सा काम? किसकी स्थापना? स्वर्ग की? नहीं। ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण धर्म की स्थापना, फिर वही ब्रह्मा शरीर छोड़ करके जो पहला ब्राह्मण बनता है, पहला ब्राह्मण सो पहला देवता बनता है, जिसके आदिदेव के रूप में चित्र आज भी गाँव–2 में, शहर–2 में, देश–देशान्तर में, खुदाइयों में भी जिसके चित्र मिले हैं, संगमयुग के पार्ट की यादगार के चित्र मिले हैं, हाँ उसके द्वारा प्रत्यक्ष होता है। बरोबर अनेक धर्मों का विनाश हुआ था। ऐसे नहीं, अनेक मत–मतांतर ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियाँ में और बाहर की दुनियाँ में भी चलते रहेंगे। नहीं। एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा और एक मत– ऐसा संगठन तैयार ज़रूर होगा। हाँ, पहले छोटे रूप में तैयार होगा, फिर बड़े रूप में प्रत्यक्ष होगा। पहले छोटी माला बनेगी, फिर बड़ी माला बनेगी। तो सब धर्मों का इस महाभारत लड़ाई में खात्मा हो जावेगा, अनेक धारणाएँ सब खलास हो जावेंगी। नई सृष्टि कैसे स्थापन होगी– इसके बारे में सब ब्राह्मणों की अनेक प्रकार की धारणाएँ हैं; क्योंकि ब्राह्मण नौ कुरियों के होते हैं, अलग–2 धर्मों में कन्वर्ट होने वाले होते हैं; कच्चे भी होते हैं तो पक्के भी होते हैं; 100 परसेंट भी होते हैं तो हाफ परसेंट भी, हाफ कास्ट ब्राह्मण भी होते हैं।

जो राजयोग सीखते थे, उन्हों की फिर से राजधानी स्थापन हो गई। क्या कहा? किनकी राजधानी स्थापन हो गई? जो राजयोग सीखते थे। पास्ट में क्यों लगा दिया? ज़रूर यज्ञ के आदि में भी कोई युगल जोड़ी थी, जिसके द्वारा प्रवृत्तिमार्ग की राजयोग की स्थापना का कार्य चला था। बाकी निवृत्तिमार्ग वाले प्रवृत्तिमार्ग का राजयोग नहीं सिखलाय सकते। ब्रह्मा–सरस्वती को भी प्रवृत्ति नहीं कहेंगे। क्यों? क्योंकि वो तो उनकी बेटी थी। कहाँ 60 साल का बूढ़ा और कहाँ 14 साल की कन्या– ये प्रवृत्ति नहीं शोभती। (किसी ने कुछ कहा–...) नहीं। राजयोग सिखाया, तो राजा कौन–2 बने? राजा बने या एक–दूसरे के बंधन में बँधने वाले बने? अधिकारी बने हैं या आधीन बने हैं? अगर राजयोग सिखाया (...) (ओमशांति)